गर्भाधान-पुंसवन-सीमन्तोन्नयन-संस्कार

सम्पादक

प्रो. राममूर्ति शर्मा

लेखक

डॉ. कमलाकान्त त्रिपाठी

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
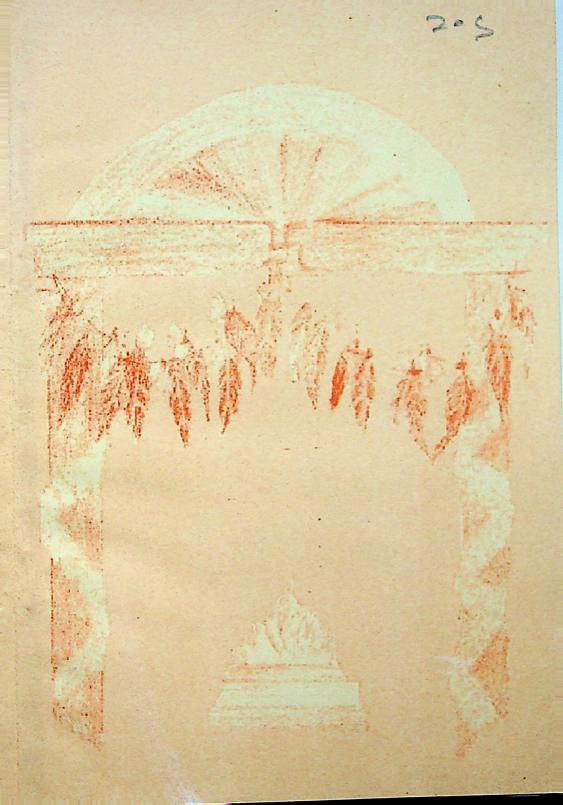
संस्कार-ग्रन्थमाला
[द्वितीय पुष्प]

गर्भाधान-पुंसवन-सीमन्तोन्नयन-संस्कार

[पूजा-विधि-सहित]

सम्पादक

प्रो. राममूर्ति शर्मा

कुलपति

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

वाराणसी

लेखक

डॉ. कमलाकान्त त्रिपाठी

प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, मीमांसा-विभाग

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

वाराणसी

वाराणसी

२०५८ वैक्रमाब्द १९२३ शकाब्द २००१ खैस्ताब्द

ISBN : 81-7270-059-8

अनुसन्धान - प्रकाशन - पर्यवेक्षक —

निदेशक, अनुसन्धान-संस्थान

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

वाराणसी।

❑

प्रकाशक—

डॉ. हरिश्चन्द्र मणि त्रिपाठी

निदेशक, प्रकाशन-संस्थान

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

वाराणसी-२२१००२

❑

प्राप्ति-स्थान —

विक्रय-विभाग,

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

वाराणसी-२२१००२

❑

प्रथम संस्करण – १००० प्रतियाँ

द्वितीय पुष्प की एक प्रति का **मूल्य** – ३०.०० रूपये (पेपरबैक में)

संस्कार-ग्रन्थमाला के प्रथम पुष्प से दशम पुष्प तक के पूरे सेट का **मूल्य** – ३००.०० रूपये (पेपरबैक में)

❑

मुद्रक —

श्रीजी कम्प्यूटर प्रिण्टर्स

नाटी इमली, वाराणसी-२२१००१

पुरोवाक्

कर्मकाण्ड भारतीय जीवन का प्रधान अङ्ग है। कर्मकाण्ड के अन्तर्गत भी गर्भाधान आदि संस्कार मानव के आद्योपान्त निर्माण एवं उसकी सद्गति के साधक हैं। भारतवर्ष में ग्रामों से लेकर महानगरों तक ये संस्कार सम्पन्न होते देखे जाते हैं; किन्तु प्रायः यह दृष्टिगत होता है, कि ग्रामों में ही क्या नगरों में भी, प्रायः ये संस्कार सम्यक् रूप से सम्पन्न नहीं होते। स्वभावतः, ग्रामों की स्थिति, नगरों की अपेक्षा, इस सम्बन्ध में अधिक शोचनीय है। इसका कारण यही है, कि ग्रामों में सम्यगधीत कर्मकाण्डी विद्वान् नहीं उपलब्ध हो पाते। इसका परिणाम यह होता है, कि कभी-कभी अधीत यजमान की कर्मकाण्ड एवं तथाकथित कर्मकाण्डी में अनास्था, अश्रद्धा हो जाती है। हमारे माननीय उच्च-शिक्षा मन्त्री **श्री ओमप्रकाश सिंह जी** ने जो उच्च-शिक्षा के क्षेत्र में अपेक्षित परिवर्तन एवं परिष्कार के लिए कटिबद्ध हैं तथा अपने प्रयत्नों में पूर्णतया सफल हुए हैं, हमारा ध्यान कर्मकाण्डगत उक्त समस्या की ओर आकृष्ट कराते हुए, भारतीय संस्कारों की ऐसी लघु एवं सरल पुस्तिकाओं की रचना का परामर्श दिया, जिनके द्वारा सामान्य पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी संस्कारों को सम्पन्न कर सके। इस कार्य को सम्पन्न करने में, मुझे अपने अध्यापकों से पूर्ण सहयोग मिला है। एतदर्थ मैं अपने इन साथियों, प्रो. युगलकिशोर मिश्र, डॉ. कुञ्जबिहारी शर्मा, डॉ. राममूर्ति चतुर्वेदी, डॉ. महेन्द्र पाण्डेय, डॉ. कमलाकान्त त्रिपाठी, डॉ. पतञ्जलि मिश्र एवं डॉ. जयप्रकाश पाण्डेय को साधुवाद देता हूँ, तथा आशा करता हूँ,

कि इन लघु पुस्तिकाओं से संस्कारों के सम्पन्न करने-कराने में सुगमता होगी, तथा लोगों की कर्मकाण्ड में श्रद्धा-आस्था की वृद्धि होगी।

प्रस्तुत कार्य को सम्पन्न करने में, निदेशक, प्रकाशन-संस्थान, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, डॉ. हरिश्चन्द्र मणि त्रिपाठी का सहयोग भी स्तुत्य है, जिन्होंने यथासमय एवं यथापेक्षित रूप में संस्कारसम्बन्धी इन लघु पुस्तिकाओं का प्रकाशन सम्पन्न किया है। अथ च इन ग्रन्थों के मुद्रक श्री अनूप कुमार नागर, सञ्चालक श्रीजी कम्प्यूटर्स भी प्रशंसा के भाजन हैं, जो सदैव हमारे मुद्रण कार्य को निष्ठा एवं तत्परता के साथ सम्पन्न करते हैं।

राममूर्ति शर्मा

राममूर्ति शर्मा
कुलपति
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

वाराणसी
मातृनवमी,
वि. सं. २०५८

प्रकाशकीय

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय की प्रकाशन-ग्रन्थमालाओं ने प्राच्य भारतीय विद्याओं की प्रायः समस्त शाखाओं को अभिव्याप्त किया है। इस विश्वविद्यालय के द्वारा माननीय कुलपति **प्रो. राममूर्ति शर्मा जी** की प्रेरणा से एक नयी ग्रन्थमाला **'संस्कार-ग्रन्थमाला'** का प्रवर्तन हुआ है। इस संस्कार-ग्रन्थमाला में हिन्दू-संस्कारों से सम्बन्धित निम्नलिखित दस पुस्तकें सम्प्रति प्रकाशित हो रही हैं—

१.	शिलान्यास एवं वास्तुपूजन-पद्धति	प्रो. युगलकिशोर मिश्र
२.	गर्भाधान-पुंसवन-सीमन्तोन्नयन-संस्कार	डॉ. कमलाकान्त त्रिपाठी
३.	जातकर्म-संस्कार	डॉ. जयप्रकाश पाण्डेय
४.	नामकरण-संस्कार	डॉ. कुञ्जबिहारी शर्मा
५.	अन्नप्राशन-संस्कार	डॉ. कुञ्जबिहारी शर्मा
६.	चूडाकरण-संस्कार	डॉ. महेन्द्र पाण्डेय
७.	कर्णवेध-संस्कार	डॉ. महेन्द्र पाण्डेय
८.	यज्ञोपवीत-वेदारम्भ-समावर्तन-संस्कार	डॉ. राममूर्ति चतुर्वेदी
९.	केशान्त-संस्कार	डॉ. महेन्द्र पाण्डेय
१०.	विवाह-संस्कार	डॉ. पतञ्जलि मिश्र

संस्कारों के विषय में गृह्यसूत्रों, धर्मसूत्रों, मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य-स्मृति तथा अन्य स्मृतियों में सामग्रियाँ पुष्कल मात्रा में उपलब्ध हैं। साथ ही रघुनन्दन के संस्कारतत्त्व, नीलकण्ठ के संस्कारमयूख, मित्रमिश्र के संस्कारप्रकाश, अनन्तदेव के संस्कार-कौस्तुभ एवं गोपीनाथ के संस्काररत्नमाला नामक निबन्ध-ग्रन्थों में भी प्रचुर मात्रा में सामग्री भरी पड़ी है। स्मृतिकारों में संस्कारों की संख्या पर भी पर्याप्त मतभेद है। महर्षि गौतम के मत से चालीस संस्कार होते हैं। महर्षि अङ्गिरा ने पच्चीस संस्कारों की बात कही है. व्यास-स्मृति में सोलह संस्कार गिनाये गये हैं। यथा—

गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तो जातकर्म च।
नामक्रियानिष्क्रमणान्नप्राशनं वपनक्रिया॥

कर्णवेधो व्रतादेशो वेदारम्भक्रियाविधिः ।

केशान्तः स्नानमुद्वाहो विवाहाग्निपरिग्रहः ॥

त्रेताग्निसङ्ग्रहश्चेति संस्काराः षोडश स्मृताः ॥

लोक में प्रायः ये ही सोलह संस्कार प्रचलित हैं। इन्हीं सोलह संस्कारों से कल्याण-परम्पराओं का भोक्ता मानव शरीर ब्रह्मत्वप्राप्ति की अर्हता प्राप्त करता है। भगवान् मनु ने इस तथ्य को निम्नलिखित श्लोक में प्रतिपादित किया है—

स्वाध्यायेन व्रतैर्होमैस्त्रैविद्येनेज्यया सुतैः ।

महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः ॥

स्थान एवं काल-भेद से विश्व स्तर पर संस्कार-भेद परिलक्षित होते हैं। वस्तुतः संस्कारों की परिधि में मानवमात्र परिवेष्टित है। मानव मन एवं शरीर पर संस्कारों का प्रभाव बहु-आयामी होता है। भारतीय संस्कार मनुष्य को पवित्र तो करते ही हैं, साथ ही उसे विभूषित भी करते हैं। इस तथ्य का उन्मीलन महाकवि कालिदास ने कुमारसम्भव महाकाव्य में बड़े मार्मिक शब्दों में किया है—

प्रभामहत्या शिखयेव दीपः

त्रिमार्गयेव त्रिदिवस्य मार्गः।

संस्कारवत्येव गिरा मनीषी

तया स पूतश्च विभूषितश्च ॥ (कुमा. १।२८)

अर्थात् जिस प्रकार प्रभा की स्निग्धता एवं देदीप्यमान आलोक से दीपशिखा पवित्र और विभूषित होती है, स्वर्गङ्गा से जिस प्रकार स्वर्गलोक पवित्र एवं विभूषित होता है, जिस प्रकार संस्कार वाली वाणी से मनीषी व्यक्ति पवित्र एवं विभूषित होता है, उसी प्रकार कन्या पार्वती से उनके पिता हिमालय पवित्र एवं विभूषित हुए।

१७ जुलाई, १९९९ की तिथि हठात् स्मृति-पटल पर आवृत हो रही है, जब हम लोग माननीय कुलपति **प्रो. राममूर्ति शर्मा जी** के नेतृत्व में भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम **डॉ. कृष्णाकान्त जी** के उपराष्ट्रपति-

भवन पर उन्हें विश्वविद्यालय के कतिपय महनीय प्रकाशनों को उपहार-स्वरूप प्रदान करने के लिए पहुँचे थे। हमारे माननीय कुलपति **प्रो. राममूर्ति शर्मा जी** ने विश्वविद्यालय के महनीय प्रकाशनों को महामहिम उपराष्ट्रपति जी के करकमलों में उपहृत करते हुए उन ग्रन्थों की विशेषताएँ निरूपित की थीं। महामहिम ने उपहारस्वरूप प्राप्त पुस्तकों को सहर्ष अङ्गीकार करते हुए कुलपति प्रो. राममूर्ति शर्मा जी से आग्रह किया था कि आपके प्रकाशनों को देखकर मैं अत्यन्त हर्षित हुआ हूँ और आप से एक विशेष आग्रह कर रहा हूँ कि भारतीय संस्कारों से सम्बन्धित पुस्तकों के प्रकाशन की ओर आपका विशेष ध्यान जाना चाहिए। महामहिम उपराष्ट्रपति जी की सदिच्छा की अनुगूँज २० अप्रैल, २००१ के दीक्षान्त-महोत्सव के अवसर पर उत्तर-प्रदेश के उच्च-शिक्षा-मन्त्री **डॉ. ओम प्रकाश सिंह जी** के दीक्षान्त भाषण में प्रतिध्वनित हुई। डॉ. सिंह जी ने हिन्दू-संस्कारों के अनुष्ठान में दिनानुदिन हो रहे ह्रास की ओर विद्वानों का ध्यान आकृष्ट कराते हुए यह आह्वान किया था कि भारतीय-समाज अपने संस्कारों के अनुष्ठान के बल पर सहस्राब्दियों से शक्ति, स्फूर्ति एवं जीवन में नावीन्य प्राप्त करता रहा है और हमारे संस्कार हमारे जीवन में **'नवो नवो भवति जायमानः'** का सन्देश देते हुए राष्ट्रीय एकता की भी प्रबल कड़ी रहे हैं। अतः मैं सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के विद्वानों से प्रबल आग्रह कर रहा हूँ कि सामाजिक जीवन में नवनवोन्मेष का आधान करने वाले हिन्दू-संस्कारों की शुद्धता, पवित्रता तथा लोक-कल्याण की भावना को अक्षुण्ण रखने का हर सम्भव प्रयास किया जाय।

इस प्रकार महामहिम उपराष्ट्रपति जी एवं माननीय उत्तर-प्रदेश के उच्च-शिक्षा-मन्त्री जी के उद्बोधनों को साकार करने के लिए विश्वविद्यालय के मनीषी कुलपति **प्रो. राममूर्ति शर्मा** जी ने अभियान चलाकर पारङ्गत धर्मशास्त्रीय विद्वानों के द्वारा विभिन्न हिन्दू-संस्कारों पर पुस्तकें लिखवायीं और उनके शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशन हेतु निरन्तर प्रेरणा देते रहे। फलस्वरूप सम्प्रति हिन्दू-संस्कारों से सम्बन्धित दस पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं; जिनमें तेरह संस्कार समाविष्ट हैं।

अतः मैं यहाँ हिन्दू-संस्कारों की शुद्धता, शुचिता एवं पवित्रता के प्रति सतत जागरूक भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम **डॉ. कृष्णकान्त जी**

एवं उत्तर-प्रदेश के माननीय उच्च-शिक्षा-मन्त्री **डॉ. ओम प्रकाश सिंह जी** के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने इस महनीय सांस्कारिक-कार्य के लिए प्रेरणा-स्रोत की भूमिका निभायी है। वस्तुतः स्वल्पातिस्वल्प समय में हिन्दू-संस्कारों की दस पुस्तकों का प्रकाशन हमारे मनीषी कुलपति **प्रो. राममूर्ति शर्मा जी** की प्रेरणा, अध्यवसाय एवं नित्योत्साह प्रदान करने से सम्भव हो सका है। अतः मैं यहाँ मनीषी कुलपति **प्रो. राममूर्ति शर्मा जी** के प्रति हार्दिक कृतज्ञता एवं प्रणाम निवेदित करता हूँ।

यहाँ मैं विभिन्न हिन्दू-संस्कारों पर स्वल्प समय में आधिकारिक ग्रन्थ लिखने वाले मनीषी विद्वानों के प्रति शिरसा आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने माननीय कुलपति महोदय की प्रेरणा से इन ग्रन्थों का लेखन सम्पन्न किया है।

इस अनुष्ठान में लगे हुए प्रकाशन-संस्थान के ईक्ष्यशोधनप्रवीण **डॉ. हरिवंश कुमार पाण्डेय,** सहायक सम्पादक **डॉ. ददन उपाध्याय,** ईक्ष्यशोधक **श्री अशोक कुमार शुक्ल, श्री अतुल कुमार भाटिया,** प्रकाशन सहायक **श्री कन्हई सिंह कुशवाहा** तथा **श्री ओम प्रकाश वर्मा** को भूरिशः धन्यवाद प्रदान करता हूँ, जिन्होंने रात्रिंदिवं इस कार्य की सम्पन्नता में अपना सहयोग प्रदान किया है। इन पुस्तकों के मुद्रक **श्री अनूप कुमार नागर** को हार्दिक धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, जिन्होंने इन पुस्तकों को निर्धारित समय में मुद्रित करने में अपनी बहुज्ञता, तत्परता तथा कौशल दिखाया है।

भारतीय समाज को सहस्राब्दियों से संस्कारित करने वाले संस्कारों की इन पुस्तकों को सान्नपूर्णा भगवान् श्री विश्वेश्वर के कर-कमलों में समर्पित करता हूँ।

विद्वत्कृपाकांक्षी

हरिश्चन्द्र मणि त्रिपाठी
निदेशक, प्रकाशन-संस्थान
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

वाराणसी
भाद्रशुक्ल-द्वादशी (वामन-द्वादशी)
२०५८ वि. संवत्

विषय-सूची

गर्भाधान-पुंसवन-सीमन्तोन्नयन-संस्कार

गर्भाधान-संस्कार

संस्कारों से किसी भी धर्मानुष्ठान में योग्यता आती है। संस्कार न होने पर किया गया धर्म फलदायक नहीं होता। इससे यही सिद्ध होता है कि संस्कारों के बिना जीवन निरर्थक है। मीमांसाभाष्य में श्रीशबर स्वामी ने कहा है—'संस्कारो नाम स भवति, यस्मिन् जाते पदार्थो भवति योग्यः कस्यचिदर्थस्य'। (मीमांसाशाबरभाष्य-३।१।३) अर्थात् संस्कार उसे कहते हैं, जिसके होने पर पदार्थ किसी प्रयोजन (कार्य) के योग्य होता है। धर्म का अनुष्ठान अभ्युदय के लिए होता है। काम्य कर्मों का तथा निषिद्ध कर्मों का त्याग करके यदि नित्य-नैमित्तिक कर्मों का अनुष्ठान किया जाता है, तो निःश्रेयस (मोक्ष) की भी प्राप्ति होती है। जिन कर्मों का निमित्त निश्चित होता है, उन्हें नित्य-कर्म कहते हैं। जैसे—सन्ध्या, अग्निहोत्र, देवपूजन आदि। ये कर्म जीवन होने पर अवश्य किये जाते हैं, न करने पर दोष लगता है। यहाँ जीवन एक अवधि के लिए निश्चित निमित्त है। जिन कर्मों का निमित्त अनिश्चित होता है, उन्हें नैमित्तिक कहते हैं। जैसे—ग्रहणस्नान **(सूर्योपरागे स्नायात्)**। यहाँ ग्रहण अनिश्चित निमित्त है। नैमित्तिक कर्म का अनुष्ठान भी अवश्य होना चाहिए, अन्यथा दोष लगेगा। स्वर्गादि कामना के लिए जो कर्म किये जाते हैं, वे काम्य कहे जाते हैं, जैसे—याग आदि।

इन सारे कर्मों का फल तभी प्राप्त होगा, जब पुरुष के संस्कार यथासमय हुए हों। असंस्कृत पुरुष के द्वारा किया गया कोई भी कर्म (धर्म) अपने फल को नहीं देता, अर्थात् निष्फल होता है। इस प्रकार यह सिद्ध हुआ कि मनुष्य-जन्म लेकर यदि संस्कारों से वञ्चित रह गया, तो मनुष्य-जन्म ही व्यर्थ हो गया। अतः संस्कारों के विषय में प्रमाद नहीं करना चाहिए। यथासमय संस्कार कराना चाहिए। संस्कार उसी

द्रव्य का होता है, जिसकी भूतकाल में अथवा भविष्यकाल में उपयोगिता हो। **'भूतभाव्युपयोगि हि द्रव्यं संस्कारमर्हति'** यह वार्तिककार श्री कुमारिल भट्ट का कथन है। जैसे इञ्जन का कोई एक यन्त्र भी बिगड़ जाय, तो पूरा इञ्जन बन्द हो जाता है, वैसे ही यदि एक संस्कार का लोप कर देते हैं और अन्य संस्कारों को यथावत् कर भी देते हैं, तो भी धर्मानुष्ठान का कोई फल प्राप्त नहीं होता। जैसे याग में अवघात, प्रोक्षण, अवदानादि संस्कार होते हैं। यदि एक संस्कार भी छोड़ते हैं, तो पूरे याग का फल प्राप्त नहीं होता। भविष्य में धर्म और ज्ञान के अनुष्ठान में संस्कारों की उपयोगिता है। दान, होम आदि तभी सफल होंगे, जब संस्कार हुए हों। संस्कारों के विधिवत् अनुष्ठान से व्यक्ति का सर्वाङ्गीण विकास होता है, परीक्षण से यह बात सिद्ध होती है। संस्कारों से सम्पन्न व्यक्ति सफलता का नित्य नया सोपान विकसित करता है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ये चारों पुरुषार्थ संस्कारों के विना अपने वास्तविक रूप को नहीं प्राप्त हो सकते। अतः निष्ठापूर्वक संस्कारों को अपनाना चाहिए। इसी में संस्कृति का विकास और राष्ट्र का उत्थान निहित है।

गर्भाधान-संस्कार की पूर्वाङ्गता

षोडश संस्कारों में यह प्रथम संस्कार है। इसके यथावत् अनुष्ठान से सन्तति सुदीर्घजीवी और गुणवान् होती है। पति के द्वारा यह सम्पादित होता है। स्त्रियों की सोलह रात्रियाँ ऋतु कही जाती हैं। रजोदर्शन से चार रात्रियाँ वर्जित हैं। प्रसङ्गतः रजस्वलाधर्म का प्रतिपादन भी उचित है। रजोदर्शन होने पर नारी सभी वस्तुओं का त्याग करे। ऐसे रहे जिससे कोई उसे देख न सके। स्नान, अलङ्कार का वर्जन करे। चञ्चलता का त्याग करे। मौन धारण करे। मिट्टी के पात्र में रात में ही भोजन करे। भूमि में ही शयन करे। चौथे दिन वस्त्र के साथ सूर्योदय के पहले सशिरस्क स्नान करके पति का मुख देखे। इस प्रकार वह शुद्ध होती है। दैव एवं पितृ कर्म में पाँचवें दिन शुद्ध

होती है। स्नान के बाद यदि पुनः रजोदर्शन हो, तो भी शुद्ध ही मानी जाती है। षष्ठी निषिद्ध है तथा पञ्चमी, सप्तमी अयुग्म हैं। अतः अष्टमी से षोडशी पर्यन्त युग्म रात्रि में जिसमें मघा, रेवती, ज्येष्ठा नक्षत्र न हो, अलङ्कारवती, अनुरागिणी भार्या में गर्भाधान करना चाहिए। दिन में ही गणेशादि-पूजन करा लेना चाहिए। पूर्णिमा तथा अमावास्या ये पर्व तिथियाँ हैं तथा रविवार और गुरुवार भी निषिद्ध दिवस हैं। अतः इनका भी वर्जन करना चाहिए। **'ऋतौ भार्यामुपेयात्'** ऋतुकाल में भार्या-गमन करना चाहिए। इस विधि में राग से ही ऋतु, अनृतु किसी काल में भार्यागमन प्राप्त है, तो ऋतुकाल मात्र का विधान मानने पर लाघव है, अर्थात् ऋतु में ही भार्यागमन करे, भिन्नकाल में न करे। इसका तात्पर्य यह निकलता है कि यदि गमन करना ही है, तो ऋतुकाल में ही करो। नहीं करना है, तो कोई बात नहीं। भार्यागमन अनिवार्य नहीं है। प्रायः वैष्णव ऐसा ही कहते हैं; किन्तु ऐसा मानना उचित नहीं है; क्योंकि—

ऋतुस्नातां तु यो भार्यां सन्निधौ नोपगच्छति।
घोरायां भ्रूणहत्यायां पच्यते नात्र संशयः॥

इस वचन से अगमन में निन्दा प्रतिपादित होती है। जो व्यक्ति ऋतुकाल में गमन नहीं करता, वह घोर भ्रूण-हत्या का पाप भोगता है, इसमें सन्देह नहीं। तात्पर्य यह है कि ऋतुकाल में गमन अवश्य करना चाहिए। यह तभी सम्भव होगा, जब कालविशिष्ट गमन विधि स्वीकार की जाय। अतः यही स्वीकार किया जाता है। एक रात्रि या तीन रात्रि के गमन से शास्त्र कृतार्थ होता है। गर्भधारण के बाद पुनः पुत्रोत्पत्ति के पाँच-छः मास बाद ही स्त्रियाँ ऋतुमती होती हैं। अतः पुनः प्रसक्ति भी तभी है। ऋतुभिन्न काल में गमन यद्यपि अप्रशस्त है, जैसा कि शास्त्र कहता है—

'नोपेयाद् यः ऋतौ भार्यामनृतौ यश्च गच्छति।
तुल्यमाहुस्तयोः पापमयोनौ यश्च गच्छति॥

अयोनौ निम्नयोनौ'। तथापि स्त्री की कामना होने पर शास्त्रकारों की अभ्यनुज्ञा है—

यथाकामं प्रवर्तेत स्त्रीणां वरमनुस्मरन्।

प्रथम गमन में यदि गर्भधारण का सन्देह हो, तो द्वितीय, तृतीय गमन भी सम्भव है। ऐसी अवस्था में पहले मन्त्रों का प्रयोग कर लेना ही उचित प्रतीत होता है। उपयोगी होने के कारण इस विषय में इतना प्रतिपादन कर दिया गया।

गर्भाधान-संस्कार-विधि

सङ्कल्प

अद्य अमुकमासादौ अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् अस्या वध्वाः संस्कारातिशयद्वारा अस्यां जनिष्यमाणसर्वगर्भाणां बीजगर्भसमुद्भवैनो-निबर्हणद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीतये गर्भाधानसंस्कारं करिष्ये। तत्पूर्वाङ्गत्वेन गणेशादिपूजनञ्च करिष्ये।

अभिगमन-विधि

रात्रि में निम्न मन्त्र पढ़कर अभिगमन करे—

'ॐ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु।
आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते॥
गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि पृथुष्टुके।
गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्त्रजौ॥
ॐ हिरण्मयी अरणी याभ्यान्निर्म्मन्मथातामश्विनौ देवौ।
तं ते गर्भं दधामहे दशमे मासि सूतवे॥
ॐ रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव तदस्य रूपं प्रतिचक्षणाय।
इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते युक्त्वा ह्यस्य हरयः शता दश॥

पश्चात् स्नानादि से पवित्र होकर आचमन करके वधू के दक्षिण कन्धे के ऊपर हाथ ले जाकर हृदयस्पर्श करके यह मन्त्र पढ़े—

ॐ यत्ते सुसीमे हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम्।

वेदाहं तन्मां तद् विद्यात् पश्येम शरदः शतम्॥

जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतम्॥

इसके बाद ताम्बूल चर्वण करे। प्रातःकाल ब्राह्मण को दक्षिणा दे।

किसी भी धार्मिक कृत्य की सफलता दक्षिणा पर ही आधारित है। **'दक्षिणान्तं कर्म'** अर्थात् दक्षिणा के अनन्तर ही कर्म की परिसमाप्ति होती है तथा कर्म अपने फल को देने में समर्थ होता है। दक्षिणा-दान में धन का सङ्कोच नहीं करना चाहिए। **'न वित्तशाठ्यं कुर्यात्'** यह शास्त्र का वचन है। दक्षिणा से यदि ब्राह्मण सन्तुष्ट नहीं होता है, तो भूयसी (पुनः) दक्षिणा देकर सन्तोषपूर्वक उसे विसर्जित करना चाहिए।

।। इति गर्भाधान-संस्कार ।।

●

पुंसवन-संस्कार

पुमान् सूयते अनेन इति पुंसवनम्। जिस संस्कार से पुत्र की उत्पत्ति हो, उसे पुंसवन कहते हैं। यह संस्कार गर्भधान के तीसरे मास में किया जाता है; क्योंकि स्त्री या पुरुष का आकार तीन मास के बाद ही होता है। शुभ मुहूर्त में पति-पत्नी स्नान करके दोनों उपवास करते हुए अच्छिन्न स्वच्छ वस्त्र धारण करके प्रथम गणेश-पूजन करें। पश्चात् प्रधान सङ्कल्प करें।

प्रधान-सङ्कल्प

अद्येह अमुकोऽहं ममास्यां भार्यायामुत्पत्स्यमानापत्यगर्भस्य बीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणपुंरूपोदयप्रतिरोधिकर्मनिरसनद्वारा श्रीपरमेश्वर-प्रीतये पुंसवनाख्यं कर्म करिष्ये, तस्य पूर्वाङ्गत्वेन मातृपूजा-नान्दीश्राद्ध-पुण्याहवाचनानि करिष्ये।

नासिका-सिञ्चन

मातृपूजादि करके सूर्यास्त होने पर वटवृक्ष के अवरोह का मूल, उसके अभाव में कुश का मूल जल से पीस कर उसका रस गर्भिणी की दक्षिण नासिका में छोड़े तथा यह मन्त्र पढ़े—

'ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम'॥

पश्चात् वाम नासिका में रस छोड़े, जिससे वह पेट में पहुँच जाय तथा यह मन्त्र पढ़े—

'ॐ अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्तताग्रे।
तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे'॥

अभिमन्त्रण

यदि वीर्यवान् पुत्र की इच्छा हो, तो एक कसोरे में जल भर कर गर्भिणी के अङ्क (गोद) में रखकर गर्भ का अभिमन्त्रण करे और निम्न मन्त्र पढ़े—

'ॐ सुपर्णोऽसि गरुत्माँस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ।।

स्तोम आत्मा छन्दांस्यङ्गानि यजूंषि नाम।

साम ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छम्॥

धिष्ण्याः शफाः सुपर्णोऽसि गरुत्मान् दिवं गच्छ स्वः पत'।।

दक्षिणादान-सङ्कल्प

अद्येह अमुकोऽहं कृतस्यास्य पुंसवनकर्मणः साद्गुण्यार्थं दक्षिणामिमां भोजनं च ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दास्ये। ॐ तत्सत्।

इसके बाद ब्राह्मण द्वारा अभिषेक तथा मन्त्रपाठ भी कराना चाहिए।

।। इति पुंसवन-संस्कार ।।

●

सीमन्तोन्नयन-संस्कार

गर्भिणी की अवस्था का प्रभाव गर्भ पर पड़ता है। यदि वह प्रसन्न रहती है, तो सन्तति उज्ज्वल होती है। इसी हेतु सीमन्तोन्नयन-संस्कार का विधान शास्त्रों में किया गया है। सीमन्त केशवेश को कहते हैं। पति ही इस संस्कार का कर्ता है।

प्रयोग

पञ्चम मास के शुभ मुहूर्त में दिन में ही पहले गणेश-पूजन करे। पश्चात् प्रधान सङ्कल्प करने का विधान है।

प्रधान-सङ्कल्प

अद्येहामुकोऽहम् अस्यां भार्यायां गर्भाभिवृद्धिपरिपन्थिपिशित-प्रियाऽलक्ष्मीभूतराक्षसगणनिरसनक्षमसकलसौभाग्यनिदानभूतलक्ष्मीसमावेशन-द्वारा प्रतिगर्भं बीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणाय श्रीपरमेश्वरप्रीतये स्त्रीसंस्काररूपं सीमन्तोन्नयनाख्यं कर्म करिष्ये।

मातृकापूजादि करके बाहर शाला में स्थण्डिल बनाकर पञ्चभूसंस्कारपूर्वक अग्नि की स्थापना करके उसके ईशानकोण में कलशविधि से कलश स्थापन करके आचार्य और ब्रह्मा का वरण कर ब्रह्मोपवेशन करे, पश्चात् विशेष उपकल्पनीय वस्तुओं का आसादन (स्थापन) करे। तथा हि—

आज्यस्थाली, चरुस्थाली, आज्य (घी), मुद्ग (मूँग), तिल, अपक्व गूलर के दो फल एक गुच्छे में लगे हुए, दर्भ (कुश), त्र्येणी (तीन स्थानों में रक्त) शल्लकी (शाही के काँटे), सरकण्डे की सींक या पीपल का शङ्कु, पूर्णपात्र, सूत्र से पूर्ण लोहे की कील, वीणा-गायक (दो)।

पवित्रछेदन से लेकर पर्युक्षणपर्यन्त कर्म करके (कुशकण्डिका विधान में) चरु-पाक करे। जब आधा पक जाय, तो तिलमिश्रित चावल उसमें डाले। इस प्रकार चरु पकाकर चरु और आज्य का उद्‌वासन करके द्रव्य त्याग करे।

हवन-सङ्कल्प

अद्येहामुकोऽहमस्मिन् सीमन्तहोमकर्मणि आज्येन आघाराज्य-भागदेवताभ्यस्तिलमिश्रितमुद्‌गस्थालीपाकेन प्रजापतिं स्विष्टकृतं तथाऽऽज्येन भूरादिनवाहुतीर्यक्ष्ये।

अग्नि की प्रतिष्ठा एवं पूजन

ॐ मङ्गलनामाग्ने सुप्रतिष्ठितो वरदो भव। मङ्गलनामाग्नये नमः।

इस मन्त्र से पाद्य, अर्घ्य आदि से पूजन करके आघार और आज्यभाग होम करे (इन्द्र और प्रजापति के निमित्त ऐसी आहुति हो, जो गुणित चिह्न का आकार ले, उसे आघार कहते हैं। अग्नि और सोम के लिए जो आहुति दी जाय, उसे आज्यभाग कहते हैं)। ये आहुतियाँ आज्य से दी जाती हैं।

आघार-होम—

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।

ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय न मम।

आज्यभाग होम—

ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम।

ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम।

पश्चात् आज्यमिश्रित स्थालीपाक से होम करे।

हवन

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

इसके बाद आज्य से भूरादि होम करके संस्रवप्राशन, पूर्णपात्र-दान, होम-दक्षिणा का विधान करे।

सीमन्तोन्नयन

तत्पश्चात् पति के वामभाग में भद्रपीठ के ऊपर कोमल आसन पर बैठी हुई स्त्री के सीमन्त केश में एक गुच्छ वाले गूलर के दोनों फल, तीन दर्भ, त्र्येणी शल्लकी, सरकण्डे की सींक, लोह कील द्वारा ललाट के बीच से लेकर दो भाग करे और यह मन्त्र पढ़े—

'ॐ भूर्विनयानि ॐ भुवर्विनयानि ॐ स्वर्विनयानि।'

इस प्रकार तीन बार विनयन करके गूलरादि सामग्री एकीकृत उसकी वेणी में बाँधे। वहाँ मन्त्र बोले—

'ॐ अयमूर्जावतोव्वृक्ष उज्जीव फलिनी भव।'

वीणागान

इसके बाद वीणागाथी को प्रैष दे—

ॐ सोमं राजानं गायेथां यो वाऽप्यन्यो वीतता।

(उनके सामने यह पढ़ना ही प्रैष है) प्रैषित होकर वे गान करें।

'ॐ सोम एव नो राजेमा मानुषीः प्रजाः।
अविमुक्तचक्र आसीरँस्तीरे तुभ्यमसौ'॥

यह मन्त्र पढ़े। गर्भिणी के समीप में गङ्गादि पवित्र नदियों का नाम भी लेना चाहिए। इसके बाद दक्षिणा का सङ्कल्प करे।

दक्षिणादान-सङ्कल्प

अद्येहामुकोऽहमस्या भार्यायाः सीमन्तोन्नयनकर्मणः साद्गुण्यार्थम् इमां दक्षिणां भोजनं च ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दास्ये ॐ तत्सत्। दक्षिणा देकर अभिषेक, तिलक, रक्षा, घृतच्छाया, त्र्यायुष्यमन्त्रपाठादि भी कराये।

॥ इति सीमन्तोन्नयन-संस्कार ॥

●

पञ्चाङ्ग-पूजन-विधि

किसी भी माङ्गलिक कर्म तथा संस्कारों के पहले अङ्गभूत कुछ कर्म अनिवार्य होते हैं, अत: उनका एकत्र समावेश किया जा रहा है। अनुष्ठान करने वाला निर्देशानुसार यथोचित विनियोग करे।

।। अथ स्वस्तिवाचनम् ।।

कर्ता शुभ दिन में स्नान करके तिलक-धारण कर शुभासन में पूर्व की ओर मुख करके बैठे और पुरोहित द्वारा स्वस्तिवाचन कराये—

ॐ स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भग: स्वस्ति देव्यदितिरनर्व्वण:।
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु न: स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना।।१।।
स्वस्तये वायुमुपब्रुवामहे सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पति:।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तये आदित्यासो भवन्तु न:।।२।।
विश्वेदेवो नो अद्य स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्नि: स्वस्तये।
देवा अवन्त्वृभव: स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्र: पात्वंहस:।।३।।
स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पत्थ्ये रेवति।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि।।४।।
स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताऽघ्नता जानता सङ्गमेमहि।।५।।
स्वस्त्ययनं ताक्ष्र्यमरिष्टनेमिं महद्भूतं वायसं देवतानाम्।
असुरघ्नमिन्द्रसखं समत्सु बृहद्यशो नावमिवारुहेम।।६।।
अंहो मुञ्च आङ्गिरसं गयञ्च स्वस्त्यात्रेयम्मनसा च ताक्ष्र्यम्।
प्रयतपाणि: शरणं प्रपद्ये स्वस्ति संबाधेष्वभयन्नो अस्तु।।७।।

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु व्विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद्‌वृधे असन्नप्प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।।१।।

देवानाम्भद्रा सुमितिर्ऋजूयतान्देवानाᳬ रातिरभिनो निवर्त्तताम्।
देवानाᳬ सख्यमुपसेदिमाव्वयन्देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।।२।।

तान्पूर्वया निविदा हूमहे व्वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम्।
अर्यमणं व्वरुणं सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।।३।।

तन्नो व्वातो मयोभुवातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः।
तद्‌ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना श‍ृणुतन्धिष्णया युवम्।।४।।

तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्।
पूषा नो यथा वेद सामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।५।।

स्वस्ति न इन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।६।।

पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंय्यावानो विदथेषु जग्मयः।
अग्निर्जिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसा गमन्निह।।७।।

ॐ भद्रं कर्णेभिः श‍ृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳬ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।। सुमुहूर्तमस्तु।

।। गणेश-पूजा ।।

दीप जलाकर पूजन-कर्म करना चाहिए। सारे कर्मों का प्रधानभूत गणेश-पूजन कर्म होता है। अतः प्रथम उसी का विधान है। सर्वप्रथम पुष्पाञ्जलि समर्पित करे—

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।१।।

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।२।।

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥
विघ्नवल्लीकुठाराय गणाधिपतये नमः ॥३॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥४॥

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥५॥

पश्चात् अर्घस्थापन करे—

चन्दन से भूमि में त्रिकोण वृत्त, चतुरस्र मण्डल खींचकर गन्धाक्षत-पुष्पों से पूजा करके अर्घ स्थापित करके—

'ॐ शं नो देवीरभीष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं य्योरभिस्त्रवन्तु नः'।।

इस मन्त्र से जल भरे तथा—

'गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु'।।

इससे तीर्थों का आवाहन करके गन्ध-पुष्पादि छोड़कर ध्यान करे—

'अरुणोऽरुणपङ्कजे निषण्णः कमलेऽभीतिवरौ करैर्दधानः।
स्वरुचाहितमण्डलस्त्रिनेत्रो रविराकल्पशताकुलोऽवतान्नः॥

एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घं दिवाकर॥

यह मन्त्र पढ़कर सूर्य को अर्घ दे।

अर्घ देकर भूतोत्सादन करे (सर्षप-अक्षत चारों तरफ फेंकना चाहिए)।

मन्त्र—

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे ॥
पाखण्डकारिणो भूता भूमौ ये चान्तरिक्षगाः।
दिवि लोके स्थिता ये च ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

ताली इत्यादि बजाकर वामपादघात के द्वारा विघ्न दूर करके आसन की पूजा करे। मन्त्र—

ॐ आधारशक्तये पृथिव्यै नमः। कमलासनाय नमः।

पुन अर्घ की स्थापना करके जल से भरकर गन्धादि डाले और उसी जल से स्वयं का और पूजा-सामग्री का प्रोक्षण करे। (जल छिड़कने को प्रोक्षण कहते हैं)। प्राणायाम करके पूजा का सङ्कल्प करे—

सङ्कल्पः—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमाय ॐ तत्सदत्र पृथिव्यां जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्ते पुण्यक्षेत्रे हिमवत्पर्वतैकदेशे ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे कृतत्रेताद्वापरान्ते सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगस्य प्रथमचरणे षष्ट्यब्दानां मध्ये अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुक-ऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकवासरेऽमुकतिथावमुकगोत्रोऽमुकराशिरमुक-शर्माहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्तये करिष्यमाणामुककर्मणो निर्विघ्नता-सिद्धये भगवतो गणेशस्य षोडशोपचारैः पूजनं करिष्ये।।

संकल्प के बाद पीठपूजन करे (जहाँ स्थापना करनी हो, वहाँ निम्न मन्त्रों से पुष्प-अक्षत छोड़े)।

ॐ तीव्रायै नमः, ॐ ज्वालिन्यै नमः, ॐ नन्दायै नमः, ॐ भोगदायै नमः, ॐ कामरूपिण्यै नमः, ॐ सत्यायै नमः, ॐ उग्रायै नमः, ॐ तेजोवत्यै नमः, ॐ मध्ये विघ्ननाशिन्यै नमः, ॐ सर्वशक्तिकमलासनाय नमः।।

।। ध्यान ।।

एकदन्तं शूर्पकर्णं गजवक्त्रं चतुर्भुजम् ।
पाशाङ्कुशधरं देवं ध्यायेत् सिद्धिविनायकम् ॥
ॐ गणेशाय नमः ध्यानं समर्पयामि।

।। आवाहन ।।

विनायक नमस्तेऽस्तु उमामलसमुद्भव ।
इमां मया कृतां पूजां गृहाण सुरसत्तम ॥
ॐ गणेशाय नमः आवाहनं समर्पयामि।

।। आसन ।।

नानारत्नसमायुक्तं मुक्ताहारविभूषितम् ।
स्वर्णसिंहासनं चारु प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ गणेशाय नमः आसनं समर्पयामि ।

।। पाद्य ।।

गौरीप्रिय नमस्तेऽस्तु शङ्करप्रिय सर्वदा ।
भक्त्या पाद्यं मया दत्तं गृहाण प्रणतप्रिय ॥
ॐ गणेशाय नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

।। अर्घ ।।

व्रतमुद्दिश्य देवेश! गन्धपुष्पाक्षतैर्युतम् ।
गृहाणार्घं .मया दत्तं सर्वसिद्धिप्रदो भव ॥
ॐ गणेशाय नमः अर्घं समर्पयामि।

।। स्नान ।।

स्नानं पञ्चामृतैर्देव! गृहाण गणनायक ।
अनाथनाथ! सर्वज्ञ! गीर्वाणपरिपूजित ॥

ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे व्वसो मम आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्।। ॐ गणेशाय नमः स्नानं समर्पयामि। स्नानाङ्गमाचमनीयं जलं समर्पयामि। स्नान कराकर आचमन करायें।

।। वस्त्र ।।

रक्तवस्त्रयुगं देव! देवाङ्गसदृशप्रभम्।
भक्त्या दत्तं गृहाणेदं लम्बोदर हरप्रिय ।।
ॐ गणेशाय नमः वस्त्रं समर्पयामि।

।। यज्ञोपवीत ।।

राजतं ब्रह्मसूत्रञ्च काञ्चनस्योत्तरीयकम्।
गृहाण चारु सर्वज्ञ! भक्तानां सिद्धिदायक ।।
ॐ गणेशाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

।। गन्ध ।।

गन्धं कर्पूरसंयुक्तं दिव्यं चन्दनमुत्तमम्।
सर्वदेवनमस्कार्य! गृहाण मदनुग्रहात् ।।
ॐ गणेशाय नमः अक्षतान् समर्पयामि।

।। पुष्प ।।

सुगन्धीनि सुपुष्पाणि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाऽऽनीतानि पूजार्थं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ।।
ॐ गणेशाय नमः पुष्पाणि समर्पयामि।

।। धूप ।।

दशाङ्गं गुग्गुलुं धूपं सुगन्धिं सुमनोहरम्।
उमासुत! नमस्तुभ्यं धूपं मे प्रतिगृह्यताम् ।।
ॐ गणेशाय नमः धूपमाघ्रापयामि।

।। दीप ।।

गृहाण मङ्गलं दीपं घृतवर्तिसमन्वितम्।
दीपं ज्ञानप्रदं देव! रुद्रप्रिय नमोऽस्तु ते ॥

ॐ गणेशाय नमः दीपं दर्शयामि।

।। नैवेद्य ।।

सगुडान् सघृतांश्चैव मोदकान् घृतपाचितान्।
नैवेद्यं सफलं दत्तं गृह्यतां विघ्ननाशन ॥

ॐ गणेशाय नमः नैवेद्यं समर्पयामि।

भूषण के स्थान में द्रव्य अर्पित करके गणेश-मन्त्र का जप करके श्रीगणेश को अर्पित करे। पश्चात् पान चढ़ाना चाहिए।

।। ताम्बूल ।।

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलान्वितम्।
कर्पूरादिसमायुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ गणेशाय नमः ताम्बूलं समर्पयामि।

।। दशमोदकदान-सङ्कल्प ।।

अद्येहामुकोऽहम् अमुककर्मनिमित्तकं गणेशप्रीतये इमान् दशमोदकान् दक्षिणासहितान् ब्राह्मणाय दास्ये ॐ तत्सन्न मम।

ब्राह्मण का गन्धाक्षतादि से पूजन कर मोदक दान करे।

मन्त्र—

विघ्नेश विप्ररूपेण गृहाण दशमोदकान्।
दक्षिणाघृतताम्बूलगुडयुक्तान् ममेष्टद ॥

।। प्रतिग्रह-मन्त्र ।।

दाता विघ्नेश्वरो देवो ग्रहीता सर्वविघ्नराट्।
तस्मादिदं मया दत्तं परिपूर्णं तदस्तु मे ॥

।। प्रार्थना ।।

विनायक नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय।
अविघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा॥

।। दूर्वाङ्कुर-पूजा ।।

(दूर्वा का पूजन करके अर्पित करने का विधान है। अतः निम्न मन्त्रों से दूर्वा की पूजा पहले कर लेनी चाहिए।) दूर्वा पर अक्षत छिड़कें—

ॐ गणाधिप नमस्तेऽस्तु। ॐ उमापुत्र नमस्तेऽस्तु। ॐ अघनाशन नमस्तेऽस्तु। ॐ विनायक नमस्तेऽस्तु। ॐ ईशपुत्र नमस्तेऽस्तु। ॐ सर्वसिद्धिदायक नमस्तेऽस्तु। ॐ एकदन्त नमस्तेऽस्तु। ॐ इभवक्त्र नमस्तेऽस्तु। ॐ मूषकवाहन नमस्तेऽस्तु। ॐ कुमारगुरो नमस्तेऽस्तु। ॐ चतुर्थीश नमोऽस्तु ते।।

पूजा के बाद—**'ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च'**।। इस मन्त्र से गणेश को दूर्वा अर्पित करें।

।। नीराजन ।।

अन्तस्तेजो बहिस्तेज एकीकृत्यामितप्रभम्।
आरार्तिकमिदं देव! गृहाण मदनुग्रहात्॥

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्यो ज्योतिः ज्योतिः सूर्यः स्वाहा अग्निर्वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा सूर्यो वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।

।। पुष्पाञ्जलि ।।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥
विघ्नवल्लीकुठाराय गणाधिपतये नमः ॥
अविरलमदजलनिवहं भ्रमरकुलानीकसेवितकपोलम्।
अभिमतफलदातारं कामेशं गणपतिं वन्दे ॥

नमस्कार करके दक्षिणा-संकल्प करे—

अद्येहामुकोऽहममुककर्मणि निर्विघ्नतासिद्धये भगवतो गणेशस्य पूजाकर्मणः साद्गुण्यार्थमिमां दक्षिणां ब्राह्मणाय दास्ये ॐ तत्सन्न मम।

।। मातृपूजा ।।

सारे कर्मों में प्रधान संकल्प के अनन्तर ही मातृका-पूजन का विधान है। पीठ (पीढ़ा) के ऊपर सोलह मातृका स्थापित करके (पिष्टातक या सोपाड़ी से) दूर्वा से अलङ्कृत करके अर्घ की स्थापना करे। पश्चात् पूजा-सङ्कल्प करना चाहिए।

पूजा-संकल्प

अद्येहामुकोऽहममुककर्मणः पूर्वाङ्गत्वेन सर्वाभ्युदयप्राप्तये पीठे लिखितानां गणपतिसहितगौर्य्यादिषोडशमातृणां पूजनं करिष्ये।

।। प्रतिष्ठा ।।

ॐ एतन्ते देव सवितर्य्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव। मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञः समिमं दधातु विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोँ३ प्रतिष्ठ।।ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतिसहितगौर्यादिषोडशमातरः इहागच्छन्तु इह तिष्ठन्तु सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु। (अक्षत छोड़ें)

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥

धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवताः।
गणेशेनाधिका ह्येता वरदाभयपाणयः॥

ध्यान के बाद नाममन्त्र से पूजन करें (पुष्पादि छोड़ें)।

ॐ गणपतये नमः। ॐ गौर्य्यै नमः। ॐ पद्मायै नमः। ॐ शच्यै नमः। ॐ मेधायै नमः। ॐ सावित्र्यै नमः। ॐ विजयायै नमः। ॐ जयायै नमः। ॐ देवसेनायै नमः। ॐ स्वधायै नमः। ॐ स्वाहायै नमः। ॐ मातृभ्यो नमः। ॐ लोकमातृभ्यो नमः। ॐ धृत्यै नमः। ॐ पुष्ट्यै नमः। ॐ तुष्ट्यै नमः। ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः।।

इन नाममन्त्रों से आवाहन-आसन-पाद्य-अर्घ-स्नान-आचमन-वस्त्र-गन्ध-अक्षत-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-भूषणस्थान में द्रव्य समर्पित करें। पश्चात् वसोर्द्धारा-संकल्प—अद्येहामुकोऽहममुककर्मणि सर्वाभ्युदयप्राप्तये गणपतिसहितगौर्यादिषोडशमातृणामुपरि गुडसर्पिर्भ्यां वसोर्धाराः पातयिष्ये। (दीवाल या खम्भे पर मातृकाओं का उल्लेख करके उत्तराभिमुख तीन या सात घृत की धारा गिरानी चाहिए)।

आज्यं यतोऽस्ति देवानामशनं मङ्गलात्मकम्।
ततो मातृः समुद्दिश्य घृतधारा ददाम्यहम्॥

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारं देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा कामधुक्षः।।

शेष घृत ललाट (माथे) में लगाकर नीराजन करें।

।। पुष्पाञ्जलि ।।

हरात्मज चतुर्बाहो वारणास्य महोदर।
प्रसन्नो भव मह्यं त्वं गौरीपुत्र नमोऽस्तु ते॥१॥
चन्द्रास्ये चन्द्रकलया विभूषितकपालके।
प्रसन्ना भव मह्यं त्वं शिवगौरि नमोऽस्तु ते॥२॥

दुग्धोदसम्भवे भव्ये सरोजोपरिसंस्थिते।
प्रसन्ना भव मह्यं त्वं हरिपद्मे नमोऽस्तु ते ॥३॥
शुक्लाम्बरधरे देवि बीणापुस्तकधारिणि।
प्रसन्ना भव मह्यं त्वमिन्द्रकान्ते नमोऽस्तु ते ॥४॥
सदा सौभाग्यसंयुक्ते मन्दारकुसुमार्चिते।
प्रसन्ना भव मह्यं त्वं सरस्वत्यै नमोऽस्तु ते ॥५॥
सौभाग्ययुक्ते सौभाग्यदायिके दुःखवर्जिते।
प्रसन्ना भव मह्यं त्वं विजये ते नमो नमः॥६॥
चारुणा शुभपद्मेन राजमानेऽर्कसन्निभे।
प्रसन्ना भव मह्यं त्वं भो जये ते नमो नमः ॥७॥
अनेकवर्णसंयुक्ते नानाशस्त्रसमन्विते।
प्रसन्ना भव मह्यं त्वं देवसेने नमोऽस्तु ते ॥८॥
पितॄणां वल्लभे शान्ते शान्तियुक्ते शुभङ्करि।
प्रसन्ना भव मह्यं त्वं स्वधे देवि नमोऽस्तु ते ॥९॥
सप्तार्चिवल्लभे सप्तस्वरसन्तानसंस्तुते।
प्रसन्ना भव मह्यं त्वं स्वाहे देवि नमोऽस्तु ते ॥१०॥
वराभयकरा भव्याः प्रसन्नमुखपङ्कजाः।
सुप्रसन्नाः प्रजायन्तां मह्यं ताभ्यो नमो नमः ॥११॥
रक्षिकाः सर्वलोकानां नितरां लोकमातरः।
सुप्रसन्नाः प्रजायन्तां मह्यं ताभ्यो नमो नमः ॥१२॥
धृतिसञ्जनिके धैर्ययुक्ते सर्वसमर्चिते।
प्रसन्ना भव मह्यं त्वं धृतिदेवि नमोऽस्तु ते ॥१३॥
सर्वेषां पुष्टिजनिके पूर्णकामसमन्विते।
प्रसन्ना भव मह्यं त्वं पुष्टिदेवि नमोऽस्तु ते ॥१४॥

सर्वसन्तोषजनिके सन्तोषेण समन्विते।
प्रसन्ना भव मह्यं त्वं तुष्टिदेवि नमोऽस्तु ते ॥१५॥

कुलदेवि महाभागे कुलाद्रिकृतकेतने।
प्रसन्ना भव मह्यं त्वं कुलदेवि नमोऽस्तु ते ॥१६॥

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ॥१७॥

धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश ॥१८॥

ब्रह्माणी कमलेन्दुसौम्यवदना माहेश्वरी लीलया
कौमारी रिपुदर्पनाशनकरी चक्रायुधा वैष्णवी।

वाराही घनघोरघर्घरमुखी चैन्द्री च वज्रायुधा
चामुण्डा गणनाथरुद्रसहिता रक्षन्तु नो मातरः ॥१९॥

पुष्पाञ्जलि समर्पित करके दक्षिणा का संकल्प करें।

दक्षिणासंकल्प—अद्येत्यादि..... अमुकगोत्रोऽहममुककर्मनिमित्तकं सर्वाभ्युदयप्राप्तये गणपतिसहितगौर्यादिषोडशमातॄणां पूजाकर्मणः साद्गुण्यार्थमिमां दक्षिणां ब्राह्मणाय दास्ये ॐ तत्सत्।। संकल्प करके दक्षिणा दें।

।। नान्दीश्राद्ध ।।

छः कुशवटु स्थापित करे। यव लेकर विश्वेदेवस्थानीय दो कुशवटुओं का स्पर्श करे। ॐ नान्दीमुखाः सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः अद्य क्रियमाणे साङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धे भवद्भ्यां क्षणः क्रियताम्। तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नवाव।

(पित्रादिस्थानीय दो कुशवटुओं का स्पर्श करके)

गोत्राः नान्दीमुखाः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः अद्य क्रियमाणे नान्दीश्राद्धे भवद्भ्यां क्षणः क्रियतान्तथा प्राप्नुतां भवन्तौ

प्राप्नवाव। (पुनः यव लेकर पूर्ववत् मातामहादिस्थानीय दो कुशवटुओं का स्पर्श करके) द्वितीयगोत्राः नान्दीमुखाः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः अद्य क्रियमाणे नान्दीश्राद्धे क्षणः क्रियताम्, तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नवाव।

।। पाद्य ।।

नान्दीमुखाः सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। गोत्राः नान्दीमुखाः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। द्वितीयगोत्राः नान्दीमुखाः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

।। सङ्कल्प ।।

अद्येहामुकोऽहममुककर्मणि सत्यवसुसंज्ञकविश्वेदेवपूर्वकं नान्दीश्राद्धं करिष्ये।

।। आसन-दान ।।

नान्दीमुखाः सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः इदं वः आसनम्। सुखासनम्।

गोत्राः नान्दीमुखाः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः इदं वः आसनम्। सुखासनम्।।

द्वितीयगोत्राः नान्दीमुखाः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः इदं वः आसनम्। सुखासनम्।

।। गन्धादि-दान ।।

नान्दीमुखाः सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः इदं वो यथादत्तं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। गोत्राः नान्दीमुखाः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः इदं वो यथादत्तं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। द्वितीय-

गोत्राः नान्दीमुखाः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः इदं वो यथादत्तं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।।

।। भोजननिष्क्रयद्रव्य-दान।।

नान्दीमुखाः सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तमन्नं वा तन्निष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण वः स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

गोत्राः नान्दीमुखाः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तमन्नं वा तन्निष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण वः स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

द्वितीयगोत्राः नान्दीमुखाः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तमन्नं वा तन्निष्क्रयभूतं द्रव्यम् अमृतरूपेण वः स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।।

।। सक्षीर-यवोदक-दान।।

नान्दीमुखाः सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। गोत्राः नान्दीमुखाः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः प्रीयन्ताम्। द्वितीयगोत्राः नान्दीमुखाः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः प्रीयन्ताम्।

।। आशीर्ग्रहण ।।

गोत्रं नोऽभिवर्धताम्। अभिवर्धतां वो गोत्रम्। दातारो नोऽभिवर्धन्ताम्। अभिवर्धन्तां वो दातारः। सन्ततिर्नोऽभिवर्धताम्। अभिवर्धतां वः सन्ततिः। श्रद्धा च नो मा व्यगमत्। मा व्यगमद् वः श्रद्धा। अन्नञ्च नो बहु भवेत्। भवतु वो बह्वन्नम्। बहुदेयञ्च नोऽस्तु। अस्तु वो बहुदेयम्। अतिथींश्च लभेमहि। लभन्तां वोऽतिथयः। याचितारश्च नः सन्तु। सन्तु वो याचितारः। एता आशिषः सत्याः सन्तु। सन्त्वेता आशिषः सत्याः।

।। दक्षिणा-संकल्प ।।

नान्दीमुखेभ्यः सत्यवसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेदेवेभ्यः, नान्दीमुखेभ्यः गोत्रेभ्यः पितृपितामहप्रपितामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः, नान्दीमुखेभ्यः

द्वितीयगोत्रेभ्यः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य साङ्गफलप्राप्तये साद्गुण्यार्थञ्चेमां दधिद्राक्षामलक-निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमुत्सृजे।

प्राञ्जलि (हाथ जोड़कर) ब्राह्मणों से प्रार्थना करे—'नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम्'।

'सुसम्पन्नम्' ऐसा ब्राह्मण बोलें।

पश्चात्—अमुककर्मणः पूर्वाङ्गत्वेन कृतं नान्दीमुखाभ्युदयिकश्राद्धं विसर्जये।

इदं श्राद्धं मया देशहीनं कालहीनं भावनाहीनं दक्षिणाहीनं वाक्यहीनं यत् कृतं तत् सुकृतमस्तु यन्न कृतं तत् श्रीविष्णोः प्रसादाद् ब्राह्मणानां वचनात् सर्वं परिपूर्णमस्तु। अस्तु परिपूर्णम्।

आसनों को हटाकर कर्मपात्रों को हिलायें तथा ब्राह्मणों को आमान्न दक्षिणा दें।

।। कलश-स्थापन ।।

वस्त्र से ढका हुआ कलशपात्र वेदी के ईशानकोण में सप्तधान्य के ऊपर स्थापित करें।

।। भूमिस्पर्श ।।

ॐ मही द्यौः पृथिवी च नऽइमं यज्ञं मिमिक्षतां पिपृतान्नो भरीमभिः।।

।। यव-प्रक्षेप ।।

ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तं राजन् पारयामसि।

।। कलशपात्र-स्थापन ।।

ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वतीः पुनर्मा विशदाद्रयिः।।

।। जल-पूरण ।।

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो व्वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीत्।।

कुश के ब्रह्मा की स्थापना करके कलश में गन्धादि द्रव्यों का प्रक्षेप करें।

।। गन्ध ।।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।

।। दूर्वा ।।

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

।। सर्वौषधि या हरिद्रा ।।

ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।
मनै नु बभ्रूणामहꣳ शतं धामानि सप्त च।।

।। पूगीफल ।।

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूता- स्ता नो मुञ्चन्त्वꣳ हसः।।

।। दुग्ध ।।

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।

।। दधि ।।

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभिणो मुखाकरत् प्रणऽआयूँषि तारिषत्।।

।। घृत ।।

ॐ घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्व्वी पृथ्वी मधुदुधे सुपेशसा।
द्यावा पृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा।।

।। पञ्चपल्लव ।।

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।
गोभाज इत् किलासथ यत् सनवथ पूरुषम्।।

।। सप्तमृत्तिका ।।

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी यच्छानः शर्म सप्रथाः।।

।। पञ्चरत्न ।।

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् दधद्रत्नानि दाशुषे।

।। सुवर्ण अथवा द्रव्य ।।

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

।। वस्त्र ।।

ॐ यदश्वाय वास उपस्तृणन्त्यधीवासं या हिरण्यान्यस्मै सन्दानमर्व्वन्तं पड्वीशं प्रिया देवेष्वायामयन्ति।।

(उक्त वस्तुओं को मन्त्र पढ़कर कलश में छोड़ने के बाद धान्यपूर्ण पात्र कलश के ऊपर स्थापित करें)।

।। धान्यपूर्णपात्र ।।

ॐ पूर्णा दर्व्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत।
व्वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्जꣳ शतक्रतोः।।

।। वरुण का आवाहन ।।

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो व्वरुणेह बोध्युरुशꣳ समान आयुः प्रमोषीः।।

।। कलश का अभिमन्त्रण ।। (कुश से जल छिड़कें)

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणः स्थिताः।।
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा।।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैस्तु सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।।

।। प्रार्थना ।।

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ! विधृतो विष्णुना स्वयम्।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वञ्च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।।

(इसके बाद अर्घ स्थापित करके प्राणायाम करें। पश्चात् संकल्प करें)।

।। संकल्प ।।

अद्येहामुकोऽहममुककर्मनिमित्तकं कलशे आवाहितानां ब्रह्मवरुण-सहितादित्यादिनवग्रहाणां साधिप्रत्यधिदेवतेन्द्रादिदिक्पालविनायकादि-लोकपालानां स्थापनं पूजनञ्च करिष्ये।

(पुष्पाक्षतादि कलश पर छोड़ते हुए)

ॐ भूर्भुवः स्वः कलशे आवाहिताः ब्रह्मवरुणसहितादित्यादिनवग्रहाः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सवाहनाः साधिप्रत्यधिदेवता इन्द्रादिदशदिक्पालविनायकादिपञ्चलोकपालसहिताः सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवन्तु।

नागपाशधरः स्वर्णभूषणः पद्मिनीप्रियः।
वरुणोऽम्बुपतिः श्रीमान् श्वेतो मकरवाहनः॥

(इस मन्त्र से वरुण का ध्यान करके निम्न श्लोकों से भी ध्यान करें)।

पद्मासनः पद्मकरः पद्मगर्भसमद्युतिः।
सप्ताश्वरथसंस्थश्च द्विभुजः स्यात् सदा रविः॥
श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेताश्वः श्वेतभूषणः।
गदापाणिर्द्विबाहुश्च कर्तव्यो वरदः शशी॥
रक्तमाल्याम्बरधरः शक्तिशूलगदाधरः।
चतुर्भुजो मेषगमो वरदः स्याद् धरासुतः॥
पीतमाल्याम्बरधरः कर्णिकारसमद्युतिः।
गदापाणिर्द्विबाहुश्च सिंहस्थो वरदो बुधः॥
देवदैत्यगुरू तद्वत्पीतश्वेतौ चतुर्भुजौ।
दण्डिनौ वरदौ कार्यौ साक्षसूत्रकमण्डलू॥
इन्द्रनीलद्युतिः शूली वरदो गृध्रवाहनः।
शूलबाणधरः साक्षात् कर्तव्योऽर्कसुतः सदा॥
नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी मुकुटोज्ज्वलः।
नीलसिंहासनस्थश्च राहुरत्र प्रशस्यते॥
धूम्रा द्विबाहवः सर्वे गदिनो विकृताननाः।
गृध्रासनगता नित्यं केतवः स्युर्वरप्रदाः॥
अन्ये किरीटिनः सर्वे वरदाभयपाणयः॥

(पश्चात् नाममन्त्रों से आवाहन-आसन-पाद्य आदि समर्पित करें)।

ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ आदित्याय नमः। ॐ सोमाय नमः। ॐ बुधाय नमः। ॐ बृहस्पतये नमः। ॐ शुक्राय नमः। ॐ शनैश्चराय नमः। ॐ राहवे नमः। ॐ केतुभ्यो नमः। ॐ अधिदेवताभ्यो नमः। ॐ प्रत्यधिदेवताभ्यो नमः। ॐ इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यो नमः। ॐ विनायकादिपञ्चलोकपालेभ्यो नमः।। (इति नाममन्त्राः)

(पूजन के बाद पुष्पाञ्जलि दें)

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ॥

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः
सद्बुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः शुभं शं शनिः।
राहुर्बाहुबलं करोतु सततं केतुः कुलस्योन्नतिं
नित्यप्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः॥

आयुश्च वित्तञ्च तथा सुखञ्च
धर्मार्थलाभौ बहुपुत्रताञ्च।
शत्रुक्षयं राजसु पूजितां च
तुष्टा ग्रहाः क्षेमकरा भवन्तु॥

(पुष्पाञ्जलि अर्पित करके दक्षिणा का संकल्प करें)

संकल्प—कृताया एतस्याः पूजायाः साद्गुण्यार्थमिमां दक्षिणां ब्राह्मणाय दास्ये ॐ तत्सन्न मम।

।। संक्षेपतः पुण्याहवाचन ।।

सङ्कल्प—अद्येहामुकोऽहमस्मिन् कर्मणि सर्वाभ्युदयसिद्ध्यर्थं ब्राह्मणद्वारा पुण्याहं वाचयिष्ये।

ब्राह्मणपूजन के अनन्तर वरण करें। तथा यजमान बोले—

'ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारणम्।
वेदवृक्षोद्भवं यच्च तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मम गृहे भवन्तो पुण्याहं ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण—'पुण्याहं पुण्याहं पुण्याहम्' बोलें।

यजमान—

स्वस्तिर्या अविनाशाख्या लोककल्याणसिद्धिदा।
विनायकप्रिया नित्यं तां स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मम गृहे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण—'ॐ स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति' बोलें।

यजमान—भो ब्राह्मणाः! मम गृहे ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण—ॐ ऋद्ध्यताम् ऋद्ध्यताम् ऋद्ध्यताम्।

यजमान—भो ब्राह्मणाः! मम गृहे वृद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण—ॐ कल्याणं कल्याणं कल्याणम्।

यजमान—भो ब्राह्मणाः! मम गृहे श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण—ॐ श्रीरस्तु श्रीरस्तु श्रीरस्तु।

यजमान—भो ब्राह्मणाः! मम गृहे शान्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण—ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

(इसके बाद यजमान ब्राह्मणों को दक्षिणा दे और ब्राह्मण 'पुण्याहवाचनप्रसादोऽस्तु' ऐसा कहकर यजमान को तिलक लगाकर आशीर्वाद दें।

।। रक्षाबन्धन ।।

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वामभिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल॥

त्वं यविष्ट दाशुषो नॄँःपाहि शृणुधी गिरः। रक्षा तोकमुत त्मना।।

रक्षा सुरक्षा भूयात्। (मन्त्र पढ़ने के बाद यजमान को रक्षा बाँधें।)

।। घृतच्छायादर्शन ।।

ज्ञात्वा वाऽज्ञानतो वाऽपि मनोवाक्कायकर्मभिः।

आज्येनैव मुखं दृष्ट्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते।।

घृत में यजमान अपना मुख देखे।

पूर्वोक्त सारे कर्मों को करने के बाद प्रधान संस्कार-कर्म करना चाहिए।

सीमन्तोन्नयन-संस्कार में होम होता है। उसके लिए पञ्चभू-संस्कार करना चाहिए।

।। पञ्चभू-संस्कार ।।

आचार्य दक्षिण हस्त में कुशपुञ्ज लेकर उठकर दक्षिण से लेकर उत्तर तक तीन बार परिसमूहन करें। पश्चात् कुण्ड अथवा स्थण्डिल के बाहर ऐशान्य (पूर्व-उत्तर का कोण) में कुश को फेंक दें। पश्चात् 'गोमयेन उपलिप्य' दक्षिण हस्त से गोबर से लेपन करे। हाथ धोकर दक्षिण हस्त से स्रुव के मूल से वहाँ तीन बार उल्लेखन करके वहाँ की धूल अनामिका-अङ्गुष्ठ से लेकर पूर्व की ओर फेंक दे।

पश्चात् 'उदकेन अभ्युक्ष्य' जल छिड़क दे।

।। अग्निस्थापन ।।

ताम्रपात्र में स्थित अग्नि वेदी में अपने सम्मुख स्थापित करके मन्त्र पढ़े—

'ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे देवाँ आसादयादिह'। अग्नि की स्थापना करके आचार्य और ब्रह्मा का पूजनपूर्वक वरण करे।

।। आचार्य-प्रार्थना ।।

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् आचार्यो भव सुव्रत ।।

।। ब्रह्मा की प्रार्थना करे ।।

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्ववेदधरो विभुः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम ।।

'अस्मिन् कर्मणि त्वमाचार्यो भव' 'अहं भवामीति' आचार्य की प्रत्युक्ति।

'त्वं मे ब्रह्मा भव' 'अहं भवामीति' ब्रह्मा की प्रत्युक्ति।

(अग्नि के दक्षिण ब्रह्मा का आसन, जहाँ पर वे बैठें)।

उत्तर में प्रणीता-आसन। वायव्य में द्वितीय आसन। ब्रह्मा से अनुज्ञात होकर प्रणीता वामहस्त से लेकर दक्षिण हस्त से उसमें जल भरकर वायव्य आसन में रखे। ततः स्पर्श करके अग्नि के उत्तर स्थापित करे। ततः तीन-तीन कुशों से अथवा एक मुष्टि से परिस्तरण (बिछाना) करे। पूर्वतः उत्तराग्र तथा दक्षिण से पूर्वाग्र एवं पश्चिमतः उत्तराग्र तथा उत्तरतः पूर्वाग्र से करना चाहिए।

।। पात्रासादन ।। (पात्रों का स्थापन)

पवित्रच्छेदन तीन कुश। दो पवित्र (कुश)। प्रोक्षणी-पात्र। आज्यस्थाली। चरुस्थाली। सम्मार्जनकुश (माजने हेतु)। पाँच उपयमन कुश। तीन समिधायें। स्रुक्। स्रुव। आज्य। तण्डुल। ब्रह्मा के दान हेतु पूर्णपात्र, द्रव्य तथा दक्षिणा।

।। पवित्रकरण ।।

दो के ऊपर तीन रखकर दो के मूल से दो कुशों को प्रदक्षिणा करके तीन के मूल-अग्र को एक करके अनामिका-अङ्गुष्ठ से दो के आगे छेदन करे। दो पवित्र हेतु रखे और तीनों को उत्तर में फेंक दे।

प्रोक्षणीपात्र में प्रणीता-जल से सेचन करके अन्य पात्र से चार बार जल भरे। वाम हाथ में पवित्राग्र, दक्षिण में दोनों पवित्रों के मूल को मध्य से पकड़कर प्रोक्षणी-जल का दोनों पवित्रों से उत्पवन (जल-उछालना) करे। प्रोक्षणी वाम हस्त में लेकर दक्षिण हस्त उत्तान करके मध्यमा-अनामिका के मध्यपर्व से जल का तीन बार उद्इंगन (जल को ऊपर उछालना) करे। प्रणीता से प्रोक्षणी का प्रोक्षण करे। प्रोक्षणी-जल से आज्यस्थाली का प्रोक्षण करे। चरुस्थाली-प्रोक्षण। (प्रोक्षण जल छिड़कने को कहते हैं) सारी वस्तु का प्रोक्षण करे। पश्चात् प्रणीता, अग्नि के मध्य प्रोक्षणी को रखे। आज्यस्थाली में घी रखे। चरुस्थाली में चावल रखे। इसे तीन बार धोये। चरुपात्र में प्रणीता जल से सेचन करके दक्षिण से ब्रह्मा द्वारा आज्य का अधिश्रय (आग पर स्थापन), आचार्य द्वारा चरु का करे। जलती अग्नि को दोनों के चारों ओर घुमाये। (पर्यग्निकरण)। जब चरु आधा पक जाय, तो स्रुव को आग में तपाये तथा संमार्ग कुशों से उसका संमार्जन करे, अग्र से अग्र का और मूल से मूल का। प्रणीता जल से अभ्युक्षण करके पुनः तपाये तथा स्थान पर रख दे। (आज्य और चरु का उद्वासन)। ततः पवित्रों से तीन बार आज्य का प्रत्युत्पवन करे। उपयमन कुशों को वाम हस्त में लेकर खड़े होकर घृत से सिक्त समिधाओं का पर्युक्षण करके 'स्वाहा' कहकर होम करे। पश्चात् प्रोक्षणी-जल के शेष से हाथ में पवित्र के साथ अग्नि के ईशानकोण से लेकर उत्तर पर्यन्त प्रोक्षण करके पवित्रों को प्रणीता में रखे। संस्रव (हवनशेष पदार्थ) को रखने के लिए प्रोक्षणी को प्रणीता, अग्नि के मध्य में रखे। आघार-आज्यभाग होम करे।

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम। ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय न मम (ये आघार होम हैं)। ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये न मम। ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम। (ये आज्यभाग होम हैं)। ततः अग्नि-पूजन करे—ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मत् जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम।। गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य से पूजन करे।

(हाथ में जल लेकर) इमानि हवनीयद्रव्याणि या या यक्ष्यमाणा देवतास्ताभ्यस्ताभ्यः मया परित्यक्तानि न मम यथादैवतानि स्युः।

(ग्रह-अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता आदि कशलविधि में आवाहित देवताओं को आहुति दे। विशेषतः तत्तत्कर्म में निर्देशानुसार होम करे)। पूर्णाहुति करके ब्रह्मा को पूर्णपात्र का दान करे।

(त्र्यायुष्यकरण भस्म से)

'ॐ त्र्यायुषं जगदग्नेः' ललाट में, 'ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्' ग्रीवा में, 'ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्' दक्षिण स्कन्ध में, 'तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्' हृदय में भस्म लगाये। पश्चात् पूरे मन्त्र से सारे अङ्गों का स्पर्श करे।

दक्षिणा-संकल्प—अद्येहामुकोऽहममुककर्मनिमित्तकहोमकर्मणः साङ्ग-फलप्राप्तये साद्‌गुण्याय च अग्निदैवत्यं सुवर्णनिष्क्रयभूतं द्रव्यमाचार्याय भूयसीं दक्षिणामन्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दास्ये।

।। विसर्जन ।।

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ! स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन॥

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥

●

परिशिष्ट

पारिभाषिक शब्दों के अर्थ

अभिगमन

सन्तान की कामना से विधिवत् पाणिगृहीता भार्या में शास्त्रोक्त विधि से गर्भधारण कराना अभिगमन कहा जाता है।

पुंसवन

प्रथम गर्भ में पुत्र ही हो, इस कामना से किया जाने वाला संस्कारविशेष पुंसवन कहा जाता है।

अभिमन्त्रण

मन्त्रपूर्वक जल का सिञ्चन करना अभिमन्त्रण कहा जाता है।

सीमन्तोन्नयन

गर्भिणी स्त्री के शिर में बालों के विभागस्थल (माँग) को सीमन्त कहा जाता है, उसी में मन्त्रपूर्वक गूलरादि औषधियों से ऊपर रेखा करना सीमन्तोन्नयन कहलाता है।

वीणागान

संस्काराङ्गभूत मन्त्रपूर्वक वीणावाद्य के वादन को वीणागान कहा जाता है।

●